SANDIPANI ACADEMY

PENDRI MASTURI, BILASPUR (C.G.)

RESEARCH WORK BY FACULTY

SESSION – 2019-20

S.NO.	FACULTY NAME	TITAL OF PAPER	NAME OF JOURNALS
1	Dr. RITA SINGH	‘‘बिलासपुर जिले के शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूलों के सामान्य एवं अनुसुचित जनजाति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ मे तुलनात्मक अध्ययन।‘‘	दृष्टिकोण कला मानविकीय एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका
2	Ms. DIPTI SINGH RATHORE	”प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के शालेय समायोजन का अध्ययन”	International Research Journal of humans resource and Social Science

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

डॉ. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

R. Singh

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टिकोण

असगर वजाहत की कहानियों में समकालीन यथार्थ—छोटे कुमार मंडल 3022

दार्जिलिंग पहाड़ियों की चुनावी प्रणाली में अनुसूचित जाति समुदाय की भागीदारी का एक ऐतिहासिक अध्ययन —मोनिषा हिमांग 3024

वर्ण जाति एवं अस्पृश्यता के प्रश्नों का हिंदी दलित पत्रिकारिता से सरोकार—दुर्गेश कुमार देव 3028

मोबाइल एडिक्शन: एक विश्लेषण—डॉ० भावना 3034

भारतीय उपमहाद्वीप में नक्सलवाद की चुनौती: एक विवेचना—रवि रंजन प्रताप 3041

समावेशी शिक्षा और विद्यालय—अभिषेख कुमार पाण्डेय 3046

महाराणा कुम्भाकृत 'संगीत राज' ग्रन्थ का स्वरूप—प्रो० के० शशि कुमार; आवेश कुमार 3054

गुरू जम्भेश्वर के चिंतन में बाल कल्याण और नैतिक विकास—वैष्णव संगीता कुमारी 3061

भारत में जनसंख्या वृद्धि नियोजन का विश्लेशणात्मक अध्ययन—डॉ० शिवप्रताप सिंह; राकेश कुमार मौर्य 3064

जनपद हापुड के आर्थिक विकास में महिलाओं की भागीदारी का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन —डॉ० कविता सक्सैना; शालिनी त्यागी 3069

हिन्दी उपन्यास साहित्य में साम्प्रदायिक सद्भाव—साधना मिश्रा 3076

नरेश मेहता के कथा साहित्य में युग बोध—बबिता पाठक 3079

प्रेमचन्द की कहानियाँ और बाल मनोविज्ञान—कंचन 3082

कार्ल मार्क्स, महात्मा गांधी एवं वैज्ञानिक क्रान्ति—डॉ० किरण मदान 3084

राजस्थानी लोकनाट्य में अली बख्शी ख्याल परम्परा—रूपा 3087

ग्रामीण भारत में संयुक्त परिवार का विघटन—संतोष विश्वकर्मा 3091

मंजूर एहतेशाम कृत 'सूखा बरगद' उपन्यास में विभाजन की त्रासदी—डॉ० माजिद पटेल 3096

"किशोरों के समय प्रबंधन क्षमता का उनके जीवन शैली पर प्रभाव का अध्ययन करना"—श्री मुकेश खुटले 3100

"बिलासपुर जिले के शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूलों के सामान्य एवं अनुसुचित जनजाति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ मे तुलनात्मक अध्ययन"—डॉ० रीता सिंह 3105

R. Singh

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

"बिलासपुर जिले के शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूलों के सामान्य एवं अनुसुचित जनजाति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ मे तुलनात्मक अध्ययन"

डॉ० रीता सिंह

प्राचार्य, सांदीपनी एकेडमी (मस्तूरी), बिलासपुर- छ.ग.

सारांश

शिक्षा में मनोविज्ञान के विकास के फलस्वरूप ही शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति का उद्भव हुआ। मनोवैज्ञानिक प्रगति ने शिक्षा को बाल केन्द्रित बनाने के साथ साथ शैक्षिक समस्याओं का समाधान खोजने में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का अत्यधिक प्रयोग करने का प्रयास किया। मनोविज्ञान ने बालकों की प्रकृति को समझने में सहायता प्रदान की, जिसके फलस्वरूप माता-पिता, अध्यापकगण तथा प्रशासकतंत्र सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सरल, सुगम तथा प्रभावशाली बनाने में सफल होते है। शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान के ज्ञान के बढ़ते प्रयोग के फलस्वरूप शिक्षा प्रक्रिया में संलग्न व्यक्तियों के लिये मनोविज्ञान के तथ्यों, सिद्धांतो तथा अनुप्रयोगों का अध्ययन करना अपरिहार्य हो गया है। शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान के अध्ययन की आवश्यकता ने शिक्षा मनोविज्ञान तथा शिक्षा के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

Keywords- अनुसुचित जनजाति, आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना-

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा मनोविज्ञान का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शिक्षार्थी, शिक्षक एवं शिक्षा व्यवस्था तीनों ही दृष्टि से शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व एवं उपयोगिता असंदिग्ध है। व्यक्तित्व की भिन्नताओं को समझने में बालकों की रूचि, उपलब्धि, अभिव्यक्ति, अभिक्षमता के विकास में शिक्षा मनोविज्ञान का बहुत महत्व है।

शिक्षा, कौशल को धारण किये हुए है जो कि समन्वित रूप से शेष अन्य लोगों से कहीं न कहीं अलग है। जब इन शीलगुणों और कौशलों को उपयुक्त अवसर तथा वातावरण प्राप्त होता है तभी व्यक्ति का विकास उसकी क्षमता के अनुसार हो पाता है अन्यथा नहीं। इसके लिये शिक्षा प्राप्त करना अत्यावश्यक है। मनोवैज्ञानिक विकास एवं अनुसंधानों ने शिक्षा के स्वरूप को प्रभावित किया है। मनोविज्ञान ने व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों और सामाजिक वातावरण को समझने में सहयोग दिया जिससे शिक्षा और मनोविज्ञान में बाह्य संबंध स्थापित हुआ।

अध्ययन का औचित्य-

प्रत्येक बालक अर्न्तनिहित शक्तियों एवं ज्ञान से युक्त होता है परन्तु उनकी मानसिक बौद्धिक क्षमताएं भिन्न-भिन्न होती हैं जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि व आकांक्षा स्तर को प्रभावित करती हैं। इसके साथ ही बालक की शैक्षिक उपलब्धि व आकांक्षा स्तर पर

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

उनके जातिभेद व क्षेत्रभेद का भी प्रभाव पड़ता है। डिसूजा (1980), मेहता व माथुर (1985) के अनुसार विद्यार्थियों के सामाजिक, आर्थिक स्तर का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। के.एस. राजपूत (1992) के अनुसार माता-पिता का शैक्षिक स्तर बालक शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। तारा (1980), शर्मा (1990), कौर (1992) ने अपने शोध निष्कर्षों में पाया कि विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर को उनका लिंग व गृह वातावरण प्रभावित करता है।

उपरोक्त शोध अध्ययन पारिवारिक वातावरण, शालेय वातावरण, सामाजिक, आर्थिक स्तर, सामान्य व अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों से संबंधित अध्ययन है परन्तु बहुत कम कार्य माध्यमिक स्तर के सामान्य व अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर, शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों से संबंधित है।

समस्या कथन–

''बिलासपुर जिले के शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूलों के सामान्य एवं अनुसुचित जनजाति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ मे तुलनात्मक अध्ययन।"

प्रयुक्त पदों की परिभाषाएं–

हायर सेकेण्डरी स्कूल–

हायर सेकेण्डरी स्कूल में 11-12 वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को हायर सेकेण्डरी स्कूल माना गया है।

सामान्य जाति–

प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय संविधान के अनुसार ''वह वर्ग जो आरक्षित वर्ग में नही आते है सामान्य जाति के अन्तर्गत लिया गया हैं।

अनुसूचित जनजाति–

प्रस्तुत अध्ययन में आदिवासी, गिरिजन, वनवासी यथा उरांव, कवंर, गौड जिनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति निम्न है। ऐसे समूह के विद्यार्थियों को अनुसूचित जन जाति के विद्यार्थी माना गया हैं।

आकांक्षा स्तर–

प्रस्तुत अध्ययन में आकांक्षा स्तर से आशय डॉ. व्ही, पी, शर्मा एवं अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर मापनी को प्रशासित करने से प्राप्त प्राप्तांको से हैं।

शैक्षिक उपलब्धि–

शैक्षिक उपलब्धि विद्यालय एवं महाविद्यालयों की परीक्षाओं से संदर्भित होता है। परीक्षाओं के अंतिम में विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त कुल अंक जो कि महाविद्यालयों के द्वारा अभिलेख के रूप में रखा जाता है व जिसके माध्यम से शैक्षणिक उपलब्धियों में विद्यालय एवं महाविद्यालयों द्वारा चिंतन किया जाता हैं।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. हायर सेकण्डरी स्कूल के सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर पर उनकी क्षेत्र भेद के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. हायर सेकण्डरी स्कूल के सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी क्षेत्र भेद के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. हायर सेकण्डरी स्कूल के सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आकांक्षा स्तर पर उनके लिंग भेद के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. हायर सेकण्डरी स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा आकांक्षा स्तर के बीच सहसम्बंध का अध्ययन करना।

R. Singh
Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

शोध विधि-

प्रस्तुत अध्ययन एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन हैं। जिसमें माध्यमिक स्तर पर सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आकांक्षा स्तर का मापन कर अध्ययन किया गया है। इसमें चार मुख्य व्यवस्थाओं का पालन किया गया हैं-

1. शोध प्रश्न एवं उद्देश्यों का निर्धारण करना - इनका प्रारूप प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष समस्याओं से संबंधित हैं। अप्रत्यक्ष प्राथमिक रूप से शोध निर्देशित करते हैं। बहुत से शोध प्रश्न कार्य स्थल से उभरे हैं। प्रदत्तों के संकलन के पश्चात् शोध प्रश्नों के आधार पर परिकलन किया गया, ताकि क्षेत्र की वास्तविकता को उजागर किया जा सके।
2. विभिन्न स्रोतो से प्रदत्त संकंलन के पश्चात् व्यवहारगत एवं अन्य विधियों के उपयोग से समस्याओं का विश्लेषण, निष्कर्षों का संश्लेषण एवं प्रदत्तों का सामान्यीकरण किया गया।
3. शोध की व्यवस्था के अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण तथा शोध प्रश्नों का संतुलित पर्यावरण तैयार किया गया हैं।

जनसंख्या एवं न्यादर्श-

न्यादर्श हेतु बिलासपुर जिले के 5 विकासखंडों के हायर सेकेण्डरी स्कूलों में अध्ययनरत 100-100 छात्र छात्राओं को ग्रामीण, शहरी सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों का चयन सोद्देशीय न्यादर्श विधि द्वारा किया गया हैं।

इस प्रकार प्रत्येक विकासखंड से 200 विद्यार्थियों व 5 विकासखंडों मे कुल 1000 विद्यार्थियो को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया हैं।

शोध उपकरण-

अनुसंधान प्रक्रम में समस्या के निश्चित परिकल्पना के निर्माण के पश्चात् परिकल्पनाओं की पुष्टि हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए परिकल्पनाओं की प्रकृति के अनुरूप उपकरणों का चयन किया जाता है। भौतिक विज्ञान तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान में आंकड़ों के संकलन में अधिकांशत: प्रायोगिक पद्धति अनेक मनोवैज्ञानिक समस्यायें ऐसी होती है जिसके अध्ययन में प्रायोगिक विधि का उपयोग सर्वथा साध्य नहीं रहता। इसी कारण विभिन्न मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय व शैक्षिक समस्याओं के लिए आंकड़ों के संकलन में प्रायोगिक पद्धति के अतिरिक्त अन्य विभिन्न उपकरणों का उपयोग करना पड़ता है।

प्रत्येक उपकरण एक विशेष प्रकार के आंकड़ों के लिए उपयुक्त रहता है तथा कभी कभी तो किसी समस्या के लिए आंकड़े इकट्ठे करने में अनेक उपकरणों का उपयोग करना पड़ जाता है। इस प्रकार अनुसंधान कर्ता इस अवस्था में वर्तमान उपलब्ध उपकरणों का विश्लेषण करने के पश्चात् यह जानने का प्रयास करता है कि कौन सा उपकरण हमारे कार्य में साधक होगा और कौन सा नहीं, तब वह उपयुक्त उपकरण को चुन लेता है। यदि उपलब्ध उपकरण उसकी आवश्यकता को पूरा नहीं कर पाते तो वह उनमें सुधार कर लेता है अथवा नया उपकरण बना लेता है।

प्रयुक्त सांख्यिकी-

सह संबंध गुणांक-

$$rxy = \frac{N\sum xy - \sum x \sum y}{\sqrt{[N\sum x^2 - (\sum x)^2][N\sum y^2 - (\sum y)^2]}}$$

परिकल्पना-01

H_{01} शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोधकर्ता द्वारा इस परिकल्पना को लेने का आधार, शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर की जांच करने से है।

R. Singh
Principal
Department ... cation
Sandi... ...my
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

परिकल्पना के परीक्षण के लिये सामान्य जाति के विद्यार्थियों पर शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण मापनी का प्रसरण कर प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण मुख्य रूप से मध्यमान व प्रमाणिक विचलन द्वारा किया गया है। सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के परीक्षण हेतु टी परीक्षण किया गया जिसका विवरण सारणी क्रमांक 4.05 में प्रदर्शित है।

सारणी क्रमांक - 01: शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के सामान्य जाति के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्य मान	मानक विचलन	df	'टी' का मान	परिणाम
1	शहरी विद्यार्थी	250	12.02	1.39	998	7.7	सार्थक है. (p<0.01)
2	ग्रामीण विद्यार्थी	250	10.4	1.55			

सारणी क्र. 4.05 से ज्ञात होता है कि शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांको का मध्यमान क्रमशः 12.02 व 10.4 है। सामान्य जाति के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का प्रमाणिक विचलन क्रमशः 1.39 तथा 1.55 है। गणना से प्राप्त ''टी'' का मान 7.7 है।

''टी'' सारणी में df=498 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर ''टी'' का मान 1.97 है।

क्योंकि गणना से प्राप्त ''टी'' का मान सारणी से प्राप्त मान से अधिक है, इससे यह निर्धारित होता है कि सामान्य जाति के हायर सेकेण्डरी स्कूलों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तरं होता है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इस प्रकार यह स्थापित होता है कि शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों में अध्ययनरत सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एक समान नही होती हैं।

निष्कर्ष-

''शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों में अध्ययनरत सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होता है।'

परिकल्पना-02

H_{02} शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोधकर्ता द्वारा इस परिकल्पना को लेने का आधार, शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर की जांच करने से है। परिकल्पना के परीक्षण के लिये शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों पर शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण मापनी का प्रसरण कर प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण मुख्य रूप से मध्यमान व प्रमाणिक विचलन द्वारा किया गया है। अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता के परीक्षण हेतु टी परीक्षण किया गया जिसका विवरण सारणी क्रमांक 4.06 में प्रदर्शित है।

R. Singh

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

सारणी क्रमांक - 02: शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सांख्यिकीय विवरण

क्र.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	'टी' का मान	परिणाम
1	शहरी विद्यार्थी	250	14.76	11.05	998	2.20	सार्थक है. (p<0.01)
2	ग्रामीण विद्यार्थी	250	20.06	7.67			

सारणी क्र. 4.06 से ज्ञात होता है कि शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांको का मध्यमान क्रमशः 14.76 व 20.06 है। शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का प्रमाणिक विचलन क्रमशः 11.05 तथा 7.67 है। गणना से प्राप्त "टी" का मान 2.20 है।

"टी" सारणी में df=498 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर "टी" का मान 1.97 है। क्योंकि गणना से प्राप्त "टी" का मान सारणी से प्राप्त मान से अधिक है, इससे यह निर्धारित होता है कि शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के अनुसूचित जनजाति के विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इस प्रकार यह स्थापित होता है कि शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एक समान नही होती हैं। अतः यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

निष्कर्ष-

"शहरी व ग्रामीण हायर सेकेण्डरी स्कूलों के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर होता हैं।"

उपसंहार-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के हायर सेकेण्डरी स्कूलों में अध्ययनरत सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

संदर्भ ग्रंथ-

- कॉल, लोकेश (1984), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि.
- कपिल, डॉ. एस.के., असामान्य मनोविज्ञान, दिल्ली पब्लिकेशन.
- कोठारी, सी.आर. (1992), रिसर्च मेथडांलॉजी, न्यू देहली, विले इस्ट्रन.
- कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (1973), स्टडी ऑफ वेल्यूज़ टेस्ट (हिन्दी) वाराणसी, रूपा साइकोलॉजिकल सेन्टर.
- मिश्रा, एम. (1986), कानपुर के बाहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के शैक्षिक उपलब्धियों पर सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन, पी.एच.डी. शिक्षा, कानपुर विश्वविद्यालय.
- मित्रा, मधुमिता (2007-08) उच्चतर माध्यमिक शाला के सामान्य विद्यार्थियों एवं विकलांग विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास एवं शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध, पं. रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.).
- राजपूत, जे.एस. (2004), इन्साइक्लोपीडिया ऑफ इण्डियन एजुकेशन, एन.सी.ई.आर.टी..
- शर्मा, आर.ए. (1984) शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि..
- शिन्दे, विष्णु एम. (2009), ए स्टडी ऑफ लेवल ऑफ एसपिरेशन एमंग ट्राइबल चिल्ड्रन, इंटरनेशनल रेफर्ड रिसर्च जर्नल, 2 (23): 22-23.

R. Singh
Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 7, Issue 05, May 2020
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

"प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के शालेय समायोजन का अध्ययन"

दीप्ति सिंह राठौर, सहायक प्राध्यापक,
सांदीपनी एकेडमी, पेन्ड्री (मस्तूरी), जिला – बिलासपुर (छ.ग.)

सारां"ा

प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के प्रतिभा"ाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के शालेय समायोजन को जानने के लिए किया गया है। शोध हेतु राज्य छत्तीसगढ़ के जिला – बिलासपुर के दो विकासखण्ड मस्तूरी और बिल्हा के 100 उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थीयों का चयन उद्दे"य पूर्ण न्यायद"ी विधि द्वारा किया गया है। विद्यार्थियों के शालेय समायोजन को जानने के लिए आंकड़ो के संग्रह हेतु डॉ. ए0के0 सिन्हा व डॉ. आर0पी0 सिंह (1984) द्वारा निर्मित समायोजन वस्तू सूची का प्रयोग किया गया है। उपकरणों से प्राप्त आंकड़ों के वि"लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और CR का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय वि"लेषण के बाद यह पाया गया कि प्रतिभा"ाली एवं पिछड़े बालकों के भावात्मक शालेय समायोजन, सामाजिक शालेय समायोजन और शैक्षिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया अर्थात् पूर्ण रूप में शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। परिणाम में यह पाया गया कि पिछड़े बालक मानसिक अस्थिरता, भद्र व्यवहार और कुसमायोजन के कारण शालेय कार्यो में पिछड़े रह जाते है इसके विपरीत प्रतिभा"ाली बालक स्थिर संवेग, श्रेष्ठ सामाजिक व शैक्षिक समायोजन के साथ शालेय समायोजन में सफलता पूर्वक द"िंत होते है।

की वर्ड – प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थी, शालेय समायोजन।

प्रस्तावना –

ज्ञान केवल वह नहीं है जो विद्यार्थियों को शाला में मिले बल्कि ज्ञान या शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम हँ जो जीवन भर चलता जाता है। मनुष्य अपने विभिन्न अनुभवां को संजोता है जो उसे संपूर्ण जीवन में समायोजन के साथ जीने की प्रेरणा एवं सीख देती हैं। विद्यार्थि चाहे प्रतिभाशाली हो या पिछड़े शिक्षा समान रूप से सभी स्तरो के विद्यार्थीयों को एक साथ प्राप्त हो बस विद्यार्थीयो में ज्ञान ग्रहण करने की क्षमता अलग–अलग होती है जो उनके व्यक्तित्व के अनुसार होती है। प्रतिभाशाली

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

बालको की विशेषता बताते हुए टरमन व ओडन ने कहा है कि "वह प्रतिभाशाली बालक शारीरिक गठन, सामाजिक समाजोन, व्यक्तित्व के लक्षणों विद्यालय – उपलब्धि, खेल की सूचनाओं और रचियों की बहुरूपता में सामान्य बालको से बहुत श्रेष्ठ होते हैं" अर्थात प्रतिभाशाली बालक, ऐसे विद्यार्थियों को कहा जा सकता है जो सामान्य विद्यार्थि से लगभग सभी बातो में श्रेष्ठ होते हैं। सामान्यता ऐसे विद्यार्थियों IQ या बुद्धिलब्धि 120 या उससे ऊपर होता हैं। ऐसे बालको के व्यक्तित्व में कई बातें परिलक्षित होती है जैसे मानसिक प्रक्रिया तेज होना, विशाल शब्द भण्डार, पाठ्य विषयों में अत्यधिक रूचि आदि। प्रकार कहा जा सकता है कि प्रतिभाशाली बालको की घरेलू वातावरण तथा सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि सामान्य या औसत विद्याथियो से ज्यादा होती है या श्रेष्ठ होती है।

वहीं कुछ विद्यार्थि ऐसे भी होते हैं जिन्ह शिक्षा एवं अवसर सामान्य या प्रतिभा"ााली बालको के सामान प्राप्त होती है परन्तु वह शैक्षिक या सामाजिक रूप से अन्य समकक्ष बालकों से पीछड़े या पीछे रह जाते हैं। पिछड़े बालको को परिभाषित करते हुए हिज मैजेस्ट्री कार्यालय ने अपने प्रकाशन में कहा है कि "पिछड़े बालक वे होते हैं, जो उस गति से आगे बढने में असमर्थ होते हैं, जिस गति से उनकी आयु के अधिकांश साथी आगे बढ़ रहे हैं" आर्थात् अपने समकक्ष साथीयों से शिक्षा व बुद्धि संबंधि चीजो में सामान्य रूप से पीछे रहते हैं। यहां पर विद्यार्थियों को पीछड़ापन दो रूप में माना जा रहा है एक तो शैक्षिक रूप से सामान्य स्तर से भी पिछड़ा एवं दूसरा बुद्धि या मानसिक रूप से पिछड़ा इन दोनों रूपो की शैक्षिक मंदता एवं मानसिक मंदता कहा जाता है। इनमें सीखने की इच्छा, रूचि एवं गति धीमी या कम होती है ऐसे विद्यार्थी में व्यवहार संबंधित बुद्धि समस्या होती है जो कुसमायोजन का कारण होती है इनकी बुद्धिलाब्धि 85 सा उससे कम होती है।

बालक चाहे प्रतिभाली हो या पीछड़ा शाला के लिए एक समान होता है। शाला मे सब को एक साथ लेकर चलना होता है। एवं विद्यार्थि भी शाला में समायोजन करना सीखते है यह उनके जीवन के लिए व्यक्तित्व के विकास व शैक्षिक विकास के लिए, अति आवश्यक है। गेट्स एवं अन्य ने समायोजन को परिभावित करते हुए कहते है कि "सामायोजन, यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित संबंध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।" इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्यार्थी अपने एवं शाला के वातावरण के मध्य संतुलित स्थापित करता है या संतुलन बनाये रखने के लिए अपने व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन लाता है।

विद्यार्थी अपने व शाला के वातावरण के मध्य से संतुलन बनाए रखने के लिए कई कार्य करता है, वह अपने आचरण को शाला के नियमों के अनुसार – अनुकूल करता है व सन्तुलन बैठाता है, वह शैक्षिक व अव्यवहारिक समस्याओं को

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)
Scanned with OKEN Scanner

सुलझाता है और समय आने पर आवश्यक संतुलन भी बनाता है। शालाा में समायोजन कई रूप में होता है जैसे सामाजिक
समायोजन जो विद्यार्थी अपने शाला के छोटे समूह में रह कर सबको साथ लेकर करता है। भावात्मक समायोजन यह बालको के भावनाओं से जुड़ा होता है जिसे ठस लगने पर भी संयम बनाए रखता है और अन्तिम है शैक्षिक समायोजन जो विद्यार्थी शाला के शैक्षिक कार्यो को पूर्ण करने व सफल करने के लिए अपनाता है।

किशोरों में शैक्षिक, भावात्मक एवं सामाजिक समायोजन का एक दबाव होता है कि इस कारण शालेय समायोजन में अस्थिरता आ जाती है इस हेतु प्रस्तुत शोध पत्र में प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के शालेय समायोजना का अध्ययन कार्य किय जा रहा है। जिसमे स्वतन्त्र चर के रूप में प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालक है जिनका प्रभाव शालेय समायोजन में देखा जा रहा है।

भाोध के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोधपत्र में चरों के आधार पर निम्न उद्देश्य बनाए गये हैं–

1. प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के शालेय समायोजन का अध्ययन करना।
2. प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के भावात्मक शालेय समायोजन का अध्ययन करना।
3. प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के सामाजिक शालेय समायोजन का अध्ययन करना।
4. प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्याथियों के शैक्षिक शालेय समायोजन का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

H_{01} - प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के शालेय समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

H_{02} - प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के भावात्मक शालेय समायोजन में सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा।

H_{03} - प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के सामाजिक शालेय समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

H_{04} - प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्याथियों के शैक्षिक शालेय समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

परिसीमन–

1. प्रस्तुत शोध पत्र छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले के 2 विकासरखंड बिल्हा व मस्तुरी तक सीमित है।

2. प्रस्तुत शोध पत्र बिल्हा व मस्तुरी विकासखण्ड के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 11वीं कक्ष के विद्यार्थीयो तक सीमित हैं।

शोध अभिकल्प :–

- **न्यादर्श** – प्रस्तुत शोध पत्र में बिल्हा व मस्तुरी विकासखण्ड के 11वी कक्षा के 100 विद्यार्थियो का का चयन उद्देश्य पूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है।
- **उपकरण** – प्रस्तुत शोध–पत्र में एक उपकरण विधियों का प्रयोग किया गया है –

i. **AISS** - Adjustment Inventory for School Student
डॉ. ए. के. सिन्हा एवं डॉ आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन वस्तु सूची (1984) का प्रयोग समायोजन एवं उसके तीन क्षेत्र सांवेगिक, शैक्षिक व सामाजिक समायोजन को मापने के लिए किया गया है। जिसमें 20–20 प्रश्नों के 3 सेट है अर्थात कुल 60 प्र"न है जिसमें हॉ या नही दो सम्भावित उत्तर दीये गये है। जिसमें हॉ पर 1 एवं नही पर शून्य अंक दिया जायेगा। प्राप्त अंको के योग को आँकड़ों के रूप में प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय–

प्रस्तुत शोध पत्र मे उपकरण से प्राप्त आंकड़ो के वि"लेषण हेतू मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं CR का प्रयोग कर सार्थकता की जांच किया गया।

परिकल्पनाओ का परीक्षण एवं विश्लेषण –

- **प्रथम परिकल्पना –**

H_{01} - "प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।"

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए प्राप्त आंकड़ों को प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों में वर्गीकृत किया गया है व प्राप्त आंकड़ों से मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य प्राप्त किया गया है जो कि तालिका क्रमांक 1 में प्रदर्शित है।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

Scanned with OKEN Scanner

तालिका क्रमांक 01

क्र.	विद्यार्थी समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	क्रांतिक अनुपात (CR)	स्वतंत्रता की कोटी (df)	सार्थकता (CR)	परिणाम
1.	प्रतिभा"ाली बालक	50	10.46	4.66	6.81	98	0.01 स्तर पर सार्थक	H_{01} अस्वीकृत
2.	पिछड़े बालक	50	17.34	5.41				

विश्लेषण –

उपरोक्त तालिका 03 के विश्लेषण के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः M_1 = 10.46 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_1 = 4.66 प्राप्त हुआ तथा पिछड़े बालकों के प्राप्तांको का मध्यमान M_2 = 17.34 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_2 = 5.41 प्राप्त हुआ, जिसकी सार्थकता के परीक्षण हेतु क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य निकाला गया जिसका मान CR = 6.81 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर 2.58 से अधिक है । अतः CR का मान 0.01 स्तर पर सार्थक सिद्ध होता हैं ।

द्वितीय परिकल्पना –

H_{02} – "प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों क भावात्मक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।"

इन परिकल्पना परीक्षण के लिए प्राप्त आंकडो को प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों में वर्गीकृत किया गया है एवं प्राप्त आंकड़ो से मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य प्राप्त किया गया है प्रस्तुत तालिका में प्रद"ित है –

R. Singh
Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

तालिका कमांक – 02

क्र.	विद्यार्थी समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	क्रांतिक अनुपात (CR)	स्वतंत्रता की कोटी (df)	सार्थकता (CR)	परिणाम
1.	प्रतिभा"गली बालक	50	1.58	1.56	5.06	98	0.01 स्तर पर सार्थक	H_{02} अस्वीकृ
2.	पिछड़े बालक	50	4.14	3.24				

विश्लेषण –

उपरोक्त तालिका 01 के विश्लेषण के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः M_1 = 1.58 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_1 = 1.56 प्राप्त हुआ तथा पिछड़े बालकों के प्राप्तांको का मध्यमान M_2 = 4.14 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_2 = 3.24 प्राप्त हुआ, जिसकी सार्थकता के परीक्षण हेतु क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य निकाला गया जिसका मान CR = 5.06 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर 2.58 से अधिक है । अतः CR का मान 0.01 स्तर पर सार्थक सिद्ध होता हैं ।

तृतीय परिकल्पना –

H_{03} - "प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के सामाजिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।"

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए प्राप्त आंकड़ों को प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों में वर्गीकृत किया गया है व प्राप्त आंकड़ों से मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य प्राप्त किया गया है जो कि तालिका क्रमांक 3 में प्रदर्शित है ।

तालिका क्रमांक – 03

Pr... ...al
Department ... ...ucation
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

Scanned with OKEN Scanner

क्र.	विद्यार्थी समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	क्रांतिक अनुपात (CR)	स्वतंत्रता की कोटी (df)	सार्थकता (CR)	परिणाम
1.	प्रतिभा"ााली बालक	50	5.9	2.2	13.14	98	0.01 स्तर पर सार्थक	H_{03} अस्वीकृत
2.	पिछड़े बालक	50	7.2	1.87				

विश्लेषण –

उपरोक्त तालिका 02 के विश्लेषण के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः M_1 = 5.9 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_1 = 2.2 प्राप्त हुआ तथा पिछड़े बालकों के प्राप्तांको का मध्यमान M_2 = 7.74 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_2 = 1.87 प्राप्त हुआ, जिसकी सार्थकता के परीक्षण हेतु क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य निकाला गया जिसका मान CR = 13.14 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर 2.58 से अधिक है । अतः CR का मान 0.01 स्तर पर सार्थक सिद्ध होता हैं ।

चतुर्थ परिकल्पना –

H_{04} - "प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शैक्षिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।"

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए प्राप्त आंकड़ों को प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों में वर्गीकृत किया गया है व प्राप्त आंकड़ों से मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य प्राप्त किया गया है जो कि तालिका क्रमांक 4 में प्रदर्शित है।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

तालिका क्रमांक 04

क्र.	विद्यार्थी समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	कांतिक अनुपात (CR)	स्वतंत्रता की कोटी (df)	सार्थकता (CR)	परिणाम
1.	प्रतिभा"ाली बालक	50	3.14	2.55	4.86	98	0.01 स्तर पर सार्थक	H_{04} अस्वीकृत
2.	पिछड़े बालक	50	5.62	2.51				

विश्लेषण –

उपरोक्त तालिका 03 के विश्लेषण के अनुसार प्रतिभाशाली बालकों के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः M_1 = 3.14 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_1 = 2.55 प्राप्त हुआ तथा पिछड़े बालकों के प्राप्तांको का मध्यमान M_2 = 5.62 तथा प्रमाणिक विचलन (σ_1) SD_2 = 2.51 प्राप्त हुआ, जिसकी सार्थकता के परीक्षण हेतु क्रांतिक अनुपात (CR) मूल्य निकाला गया जिसका मान CR = 4.86 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर 2.58 से अधिक है । अतः CR का मान 0.01 स्तर पर सार्थक सिद्ध होता हैं ।

परिणाम एवं विवेचना –

H_{01} –"प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।"

परिणाम – **H_{01}** परिकल्पना अस्वीकृत हुई ।

विवेचना –

प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है, इसका कारण यह हो सकता है कि पिछड़े बालकों के उच्च प्राप्तांक मानसिक अस्थिरता, भद्र व्यवहार तथा पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों में कुसमायोजन या असफलता का प्रदर्शित करता है तथा पिछड़े बालको की तुलना में प्रतिभाशाली बालकों के निम्न प्राप्तांक स्थिर संवेग, श्रेष्ठ सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक शालेय समायोजन में सफलता को दर्शाता है ।

H_{02} – "प्रतिभाशाली एवं पिछड़े विद्यार्थियों के भावात्मक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।"

परिणाम – H_{02} परिकल्पना अस्वीकृत हुई ।

विवेचना –

प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली एवं पिछडे बालकों के भावात्मक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है, इसका कारण यह हो सकता है कि पिछड़े बालकों के उच्च प्राप्तांक अस्थिरता को प्रदर्शित करता है तथा पिछड़े बालकों की तुलना में प्रतिभाशाली बालकों की मानसिक प्रक्रिया तीव्र, ज्ञान का स्तर उच्च होने के कारण प्राप्तांक निम्न पाया गया हैं ।

H_{03} – "प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के सामाजिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।"

परिणाम – H_{03} परिकल्पना अस्वीकृत हुई ।

विवेचना –

प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली एवं पिछडे बालकों के सामाजिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है, इसका कारण यह हो सकता है कि पिछड़े बालकों के उच्च प्राप्तांक अभद्र व अनाज्ञाकारी तथा समाज विरोधी कार्यों की प्रवृत्ति को प्रदर्शित करता है तथा पिछड़े बालकों की तुलना में प्रतिभाशाली बालकों की निम्न प्राप्तांक श्रेष्ठ सामाजिक शालेय समायोजन को प्रदर्ि'ात करता हैं ।

H_{04} –"प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शैक्षिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।"

परिणाम – H_{04} परिकल्पना अस्वीकृत हुई ।

विवेचना –

प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली एवं पिछड़े बालकों के शैक्षिक शालेय समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है, इसका कारण यह हो सकता है कि उच्च प्राप्तांक पाने वाले पिछड़े बालक पाठ्यक्रम और पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों के साथ समायोजित नहीं होते हैं तथा पिछडे बालकों की तुलना में प्रतिभाशाली बालकों के निम्न प्राप्तांक शैक्षिक शालेय कार्यक्रमों में अधिक सफल रहते हैं ।

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner

संदर्भ ग्रंथ

- डोंगा (1987) : "शिक्षकीय अभिक्षमता और प्रशिक्षार्थियों के समायोजन काअध्ययन", http://www-google-com
- गोस्वामी, पी. के. (1978) : "किशोरों के स्वधारणा / आत्म–प्रत्यय और विद्वता उपलब्धि तथा समायोजन के साथ इसके संबंध का एक अध्ययन" Third Survey of Research in Education (1978–1983). पृष्ठ क्र.
- गुप्ता, पी. (1984) : "परिव्यक्त संस्थागत पूर्व–किशोवय के स्वधारणा निर्भरता और समायोजन का अध्ययन", Fourth Survey of Research in Education (1983–1988) Vol–I, पृष्ठ क्र. 396.
- लाल, प्रो. रमन बिहारी एवं जोशी, डॉ. सुरेश, चन्द्र (2009) : "शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारंभिक सांख्यिकी", आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृष्ठ क्र. – 399.
- पाठक, पी.डी. (2009) : "शिक्षा मनोविज्ञान", अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ क्र. 530, 531, 539.
- सारस्वत, आर. (1982): "दिल्ली के उच्च विद्यालयी छात्रों का समायोजन, मूल्यों, अकादमिक उपलब्धि, समाजिक–आर्थिक स्तर और लिंग–भेद के संबंध में स्वधारणा का एक अध्ययन", Fourth Survey of Research in Education (1983–1988) Vol–I, पृष्ठ क्र. 427.
- शर्मा, आर. ए. (2009) : "शिक्षा अनुसंधान एवं सांख्यिकी, इंटरलेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, पृष्ठ – 155, 174, 198, 202, 218, 220, 552.
- श्रीवास्तव, के.के. (1978) : "बस्ती जिले के किशोरी बालिका, छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक चिंता के प्रभाव का अध्ययन", Third Survey of Research in Education (1978–1983), पृष्ठ क्र. 694.
- शर्मा, श्रीमती आर. के. एवं दुबे, श्रीकृष्णा, बरोलिया, श्रीमती डॉ. ए. (नीवन संस्करण) : "शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार", राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा, पृष्ठ क्र.– 247, 248, 260.
- सरीन, डॉ. श्रीमती शशिकला एवं सरीन, डॉ. अंजनी (चतुर्थ संस्करण) : "शैक्षिक अनुसंधान विधियां, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ 58.–56,

Principal
Department of Education
Sandipani Academy
Pendri (Masturi) Bilaspur (C.G.)

Scanned with OKEN Scanner